साक्षात्कार स्वर्णजयंती निदिध्यासन अंक

भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 25 अंक : 3 | (मई–जून) बुधवार, 15.5. 2002 | वार्षिक चंदा : 50.00

PAPPAJI
PRABHU KRUPA
P. O. BOX 23
VALLABH VIDHYANAGAR-388 120
GUJARAT-INDIA.
☎ (02692) 30163. 46646

DATE : 13-3-2002

સ્વામિશ્રીજી

ગુણાતીત [illegible]
[illegible]

सदा दिव्य साकार काकाजी स्वरुप गुरुजी मुकुंदजीवनदासस्वामी

आज आपका 65वां जन्मदिन है।
तो, प.पू. काकाजी की अंतर की इच्छा के मुताबिक
आपने दिल्ली में - भारत की राजधानी में भव्य मंदिर बना कर,
काकाजी की बात मन में ली और पू. काकाजी की मूर्ति पधराई।
धन्यवाद !
पू. काकाजी को अमर कर दिया - उसके लिए धन्यवाद !
दिल्ली मंडल के आप प्राण हो।
आप,
दिल्ली मंडल के और मुंबई के सभी अक्षरमुक्तों को ब्रह्मरुप करके परब्रह्म के धारक बना कर
स्वधर्म का सुख भोगो ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद !

આપકે હી પપ્પા કે જય સ્વામિનારાયણ !

Laugh out everything upto
Pratamuti Purush, & Live in God.

ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए
अनंत तेरे एहसान हैं हम पर क्या - क्या गिन पाएं...

- ओहो !
- अद्वितीय दिव्य आनंद ! दिव्य अनुभूति ! दिव्य अनुभव !
- अविस्मरणीय दिव्य आंदोलन !
- अद्‌भुत ! अनुपम ! लाजवाब ! अरे ! क्या-क्या कहें ?
- कुछ अलग ही है यहां !
- नो वर्ड्‌स टु एक्सप्रेस ! न भूतो - न भविष्यति !
- प्यॉरली ए स्पीरीच्युअल सेलीब्रेशन !

29, 30, 31मार्च को प.पू. काकाजी साक्षात्कार स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में हुई 'ज्ञानशिविर' व प.पू. गुरुजी के 65वें प्रागट्‌योत्सव निमित्त 'ताड़देव' पधारे मुंबई, महाराष्ट्र, वड़ोदरा, अमदावाद, राजकोट, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, एम.पी., दिल्ली एवं विदेश के मुक्तों के मुँह से बार-बार ये शब्द सहज निकल रहे थे... और 31 की ढलती शाम को तो दिव्यता का ऐसा आलम था कि हर एक के मन में हो रहा था कि काश ! समय रुक जाए और यह रात कभी खत्म ही ना होकर यह उत्सव चलता ही रहे-बस चलता ही रहे !

स्वयं **प.पू. गुरुजी** के मुँह से फिसल गया कि–

1956 से लेकर आज तक कई जयंतियाँ, उत्सव, पर्व, यज्ञ में मैं हाज़िर रहा-पार्टीसीपेट हुआ-अरे ! उनके आयोजन में भी मैं शामिल रहा, पर ऐसी दिव्यता मैंने कभी महसूस नहीं करी !

आज इस उत्सव को हुए करीब डेढ़ महीना होने आया है, लेकिन हर एक के दिलो-दिमाग पर वह इस कदर छाया हुआ है कि फोन, फेक्स, पत्रों और मुक्तों के मुँह की बातों द्वारा आनंद उत्सव खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा ! और... **गुरुहरि प.पू. स्वामिजी** की तब की वह आनंदविभोर मूर्ति तो कोई नहीं भूल पाएगा, जब इन्होंने कह ही दिया कि–

'...आप सब की उमंग देख कर, आप सब की भक्ति देख कर, आप सब की तरवराट देख कर, आप सभी का सच्चिदानंद का आनंद देख कर मुझे ऐसा महसूस हो गया कि गुरुजी के सान्निध्य में आज अक्षरधाम की सभा यहीं है... ये सारी सभा भी अक्षरधामरुप हो गई !'

और...प.पू. स्वामिजी को करीब एक घंटे तक उत्सव में यूं ताली बजाते रहे निहार कर **पू. दासस्वामिजी** बोल पड़े कि–

इतनी उम्र हो गई, हमने प.पू. स्वामिजी को इतना खुश और यूं ताली बजाते हुए कभी नहीं देखा !

इस उत्सव में आए हर छोटे-बड़े के मुख से यही शब्द निकल रहे थे कि–**'उत्सव अद्वितीय हुआ...'** और तभी तो प. पू. कांतिकाका के सुपुत्र **प.भ. घनश्यामभाई** के मुँह से सहज ही निकल पड़ा कि–

'खरेखर कंई जुदु ज हतुं.'(सचमुच कुछ अलग ही था)

'ताड़देव' के कॉम्पलेक्स में दाखिल होते ही हर कोई को लगता कि वाकई - यहां पूरा माहौल दिव्यता से भरा-भरा है... मानो अक्षरधाम की दिव्यता यहीं उतर आई हो ! आइए-आइए हम सभी इस अमूल्य दिव्य पूँजी की शुरुआत से लेकर आखिर तक के एक-एक क्षण को इस निदिध्यासन द्वारा चिरंजीव व शाश्वत् बना लें, ताकि– हमारी आत्मा का आनंद अखंड रहे। गुणातीत स्वरुपों व उनके संबंध वालों के प्रति हमारा दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही रहे-बढ़ती ही रहे...

जनवरी से प.पू. गुरुजी की मर्जी देख कर **'प.पू. काकाजी महाराज की साक्षात्कार स्वर्णजयंती'** को 'ज्ञानशिविर' के रुप में मनाने की लौ संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों के दिल में प्रज्जवलित हो रही थी... छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक के मन में यही एक मात्र चाहना थी कि तन, मन, धन से हर प्रकार का समर्पण करके हमारे जीवन में आए इस अनमोल अवसर की लॉटरी ना गवाँ कर प.पू. काकाजी का यत्किंचित् ऋण अदा करने का प्रयास करें। उनके द्वारा भेंट स्वरुप मिली अमूल्य पूंजी यानि– प.पू. गुरुजी को राजी कर लेने का इससे अच्छा मौका कौन-सा मिलने वाला है ?

प.पू. गुरुजी की 65वीं जयंती का भी अवसर था, पर प.पू. गुरुजी ने कहा कि मेरा जन्मदिन तो अगले साल फिर आएगा, पर **'प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती'** दोबारा नहीं आएगी और प.पू. काकाजी ने तो अपनी एक-एक क्षण गुणातीत समाज के–हमारे परम हित के लिए जीकर, हमारा व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक जतन करके हमारे उत्थान में जीवन पूरा कर दिया और आखिरकार अपनी आहुति भी दे दी ! **उनके इस परिश्रम के फलस्वरूप ही तो आज सब जगह सत्संग फलाफूला दिखाई पड़ता है, हम उजले दिखाई पड़ते हैं।**

प.पू. गुरुजी ने इस उत्सव का मार्मिक 'हेतु' बताया था कि जैसे कहते हैं **'कृष्ण कान्सियसनेस'**... वैसे ही हमें ये तीन दिन **'काकाजी कान्सियसनेस'** में यानि– मूर्ति में लय और लीन रहना है। ऊपर ठाकुरजी के हॉल में जाएं तो प.पू. काकाजी के दर्शन हों, पीछे 'स्मृतिस्थल' पर जाएं तो प.पू. काकाजी के दर्शन हों। सभा में– प.पू. काकाजी की कथावार्ता की ही केसैट सुनाई पड़ती हो... प.पू. काकाजी की स्मृति कराते भजन ही कानों पर पड़ते हों... यूं ताड़देव का पूरा संकुल बस काकामय ही हो और... हम मूर्ति में रहते हो जाएं, वही प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती मनाई कही जाए।

सच ! प.पू. काकाजी के प्रति की प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति बेमिसाल है... आज उनके संबंध में आए हर एक को स्पष्ट दर्शन होता है कि प.पू. गुरुजी की हर पल-हर सांस जैसे केवल प.पू. काकाजी के नाम है... उनका यह वर्तन हम सब के लिए आदर्श रुप बना हुआ है।

प.पू. काकाजी के प्रति प.पू. गुरुजी की भक्ति देख कर सभी सेवकों के हृदय गिलगिले जैसे हो गए... उनके अंतर की यह भावना-तमन्ना देख कर मुट्ठीभर सेवकों ने भीतर में ठान ली कि प.पू. काकाजी की रुचि, रहस्य, अभिप्राय समझने यह उत्सव 'ज्ञानशिविर' के रुप में ही मनाना है... दिन-रात देखे बिना सब लग पड़े, क्योंकि समय तो जैसे पंख लगा कर उड़ने लगा था।

प.पू. गुरुजी ने यह भी **चेतावनी** दी थी कि शो-शा करने, कॉम्पीटीशन की भावना से या अपना कौशल दिखाने-जताने की होड़ में शामिल होने की भावना से हमें यह उत्सव नहीं मनाना है, बल्कि प.पू. काकाजी का आंतर्हार्द समझ कर, जहां-जिस कक्षा पर हम अटके हों, वहां से आगे जाने का मौका खोना नहीं है। शायद इसी दिशा में हुई सेवा के फलस्वरुप ही कईयों के मुख से यूं भी सुनने को मिला कि–

यहां हर जगह निरी निर्दोषता झलक रही है...

ताड़देव में चारों ओर इस उत्सव की तैयारी का नज़ारा छलकता... भक्तों की भक्ति, निष्ठा, समर्पण, उमंग, उत्साह का बहता धोध देखने जैसा था। इससे भी अधिक प्रेरणामूर्ति प.पू. गुरुजी का सहज वर्तन - गुरुभक्ति मानो ताड़देव के कण-कण से प्रतीत हो रही थी...

रात-रात को जाग-जाग कर उन्होंने पू. अक्षरस्वरुपस्वामी, प.भ. आशिष, प.भ. संजीव सबरवालजी और प.भ. हरिशजी से **स्वर्णजयंती** के **निमंत्रण कार्ड** एवं **'ब्रह्मविद्या' के कवर पेज** का डिज़ाईन तैयार करवाया, साथ-साथ प.पू. दीदी और पू. बंसरी दीदी द्वारा किया **'स्वामी की बातों' का हिन्दी अनुवाद** भी चैक करते।

हमारे आत्मीय प.भ. अनिलजी ने प.पू. गुरुजी की दिली इच्छा को मूर्तस्वरुप देने दिन-रात देखे बिना अपनी देखभाल में प.भ. योगेशजी, प.भ. राकेश चौहान एवं ओमप्रकाश के सहकार से **'स्वर्णजयंती द्वार'** बनवाना शुरु कर दिया था...

प.पू. गुरुजी की इच्छा थी कि **प.पू. काकाजी की पुरानी भिन्न-भिन्न मुद्राओं की** एक छोटी **प्रदर्शनी** ठाकुरजी के हॉल में लगाई जाए... घंटों तक बैठ-बैठ कर मैग्नीफाईंग ग्लास से एक-एक पुराने नैगेटीव वे खुद देखते। अमदावाद से प.भ. दिलीपभाई ठक्कर भी खास इसी काम के लिए आए और वहां के कर्फ्यू लगे माहौल में भी खूब भागदौड़ करके सारे फोटोग्राफ्स बनवाए और... वे इतने अच्छे बनवाए कि प.पू. गुरुजी को एक ही नज़र में भा गए।

दूसरी ओर प.भ. राकेशभाई शाह भी प.भ. जयेन्द्रभाई के सहयोग से भजनों का नया संग्रह **'स्वर्णस्वर'** की **रीकॉर्डिंग** करवाने में जुटे दिखाई पड़ रहे थे और...

डेकोरेशन विभाग में आर्टीस्ट प.भ. सोमनाथ कतियाल, पू. निमित्तस्वामी, प.भ. अनिलजी, प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत, प.भ. ज्योतिनभाई, प.भ. विशाल, प.भ. धर्मपाल, प.भ. हृदय वर्मा (पप्पू), प.भ. राजकुमार शर्मा, प.भ. चेतन और छोटे बच्चे,

व्यवस्था विभाग में प.भ. प्रभाकरभाई, प.भ. कौशिकभाई और प.भ. राकेशभाई शाह,

धर्मशालाओं पर प.भ. जवाहरसिंह, प.भ. नरेश एवं प.भ. अनूपजी (बाटा वाले)

और

रसोई विभाग में पू. सुहृद्स्वामी-पू. संकल्पस्वामी के साथ प.भ. विनोदभाई, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विजयभाई मेहता, प.भ. अजय चावलाजी, प.भ. दिलीपभाई शाह, प.भ. राजकुमार गोयलजी, प.भ. सुशील भास्करजी वगैरह सभी पूरे उमंग-उत्साह से दिन-रात एक करके लग पड़े थे।

इसके अतिरिक्त–

दिन में डेकोरेशन के काम से खूब थके होने के बावजूद रात को बच्चों का **'भाँगड़े' और 'डाँडिया रास' की प्रेक्टीस** करना भक्ति की एक निशानी थी।

ऐसा होता है कि किसका नाम लें और किसका ना लें ? उनका धन्यवाद भी तो क्या करें - क्योंकि अपनों का आभार कैसा ? लेकिन उनकी सेवा के सम्मुख दिल झुक जाता है। इन मुट्ठीभर सेवकों को प.पू. गुरुजी के वचन से दिन-रात सेवा में लगे देख कर नेपोलियन का एक प्रसंग याद आ जाता था कि– 'नेपोलियन को किसी ने पूछा कि आपकी सफलता का राज़ क्या है ? तो नेपोलियन उसे समुद्र तट पर ले गया और वहां दिखाया कि उसके कहने पर कई सैनिक रेत का रस्सा बनाने के प्रयास में जुटे थे। इन्हें दिखा कर नेपोलियन ने कहा कि यही लोग मेरी सफलता का रहस्य हैं। मैं इन्हें जो कहता हूँ, उसे वे दिमाग लगाए बिना करने लग पड़ते हैं।'

सच कहा जाए तो एक प्रकार से निजी सेवकों के लिए यह उत्सव भी तो **'ब्रह्मयज्ञ'** का साकार स्वरुप लिए हुए था, क्योंकि मन-बुद्धि, इन्द्रियों-अंतःकरण के भावों से ऊपर उठ कर अपनी हठ, मान, ईर्ष्या की भयंकर वृत्तियों, की आहुति देकर प.पू. काकाजी के आशिष पाने दिव्यता की ओर अग्रसर जो होना था।

26 जनवरी की रात को प.पू. गुरुजी मंदिर से जुड़े आत्मीय स्वजन से प.भ. सुरजीतसिंह को राष्ट्रपति भवन पर हुई **लाईटिंग की सजावट** दिखाने स्वयं ले गए और उन्हें कहा कि इस उत्सव के लिए हमें ऐसी ही लाईटिंग चाहिए। प.भ. सुरजीतजी ने भी खूब उमंग से तुरंत हाँ करी। इससे भी अधिक–उन्होंने सेम्पल के तौर पर दो-तीन बार थोड़ी लाईटिंग करके

प.पू. गुरुजी को दिखाई और...जब प.पू. गुरुजी उससे संतुष्ट हो गए, तब ही वे लाईटिंग के लिए आगे बढ़े !

इधर अक्षरज्योति की बहनें-भाभियाँ भी भला अपनी भक्ति अदा करने कैसे पीछे रहतीं ? इन्होंने कंठी-माला, ठाकुरजी की पाघ, हार-श्रृंगार, बेज, फूलों की लड़ियाँ आदि बनाने की तैयारियाँ शुरु कर दीं... मंदिर से जुड़ी भाभियाँ फूलों इत्यादि की सेवा में आतीं; पर जो नहीं आ पातीं वे फंक्शन के 15-20 दिन पहले से अपने-अपने घर से रोज़ 30-35 रोटियाँ बना कर भेजतीं, ताकि अक्षरज्योति की बहनों को लगातार रोटी बनाने की सेवा में व्यस्त ना रहना पड़े और वे दूसरी सेवा में कार्यरत रह पाएं। यूं भाभियाँ यह सेवा द्वारा आत्मीयता की खुश्बू तो फैला ही रही थीं, साथ ही प.पू. काकाजी द्वारा बताई **'जामात करामात'** का भी दर्शन हो रहा था।

इसके अतिरिक्त, स्टेज के तीनों दिन के पर्दे– यानि दि. 29 को रंगबिरंगी होली का दर्शन कराता पर्दा, फिर दि.30 के लिए साक्षात्कार स्थल गोंडल मंदिर का दर्शन कराता पर्दा और 31 की सायं के लिए प.पू. गुरुजी को प.पू. काकाजी द्वारा मिले तीनों सूर्य एक होने के आशीर्वाद के प्रतीकरुप पर्दा तैयार हो रहा था...

साथ ही रसोईघर, प.पू. गुरुजी के रुम वग़ैरह के कन्स्ट्रक्शन का काम भी ज़ारी था...

27 की रात तक चारों तरफ सब फैला देख कर हर एक के मन में ऐसा हो रहा था कि यह सब कैसे पूरा होगा ? मंदिर में प.पू. गुरुजी के लिए गाय का दूध देने आते **प.भ. श्यामसुंदरजी** ने तो चिंतित होकर प.पू. गुरुजी को पूछ ही लिया कि– **'गुरुजी, क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि काम कुछ ज्यादा ही छिड़ गया है...'** उनकी बात सुन कर प.पू. गुरुजी थोड़ा हँस पड़े और उनको यही कहा कि महाराज सब पूरा करा देंगे...

अत्यधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि इतना सब काम यूं फैला हुआ देख कर भी सेवकों के भीतर में एक अनोखी निश्चिंतता– अडिग भरोसा था। उन्हें प.पू. गुरुजी का बल, प्रेरणा व भरोसा निरंतर मिल रहा था कि प.पू. काकाजी हर कार्य जरुर खूब अच्छी तरह पूरा कराएंगे ही... **कई तो मज़ाक में कहते भी कि दिल्ली में आजकल दो काम जोरों पर लगते हैं–सड़कों पर 'मैट्रो रेल' का और योगी डिवाईन सोसाईटी में 'स्वर्णजयंती' का !**

27 की रात को डेढ़ बजे करीब 40-50 लड़के स्टेज पर पहला पर्दा लगाने की शुरुआत करने लगे, तो सर्वप्रथम स्टेज पर ही बैठ कर इन्होंने जोर-जोर से धून्य करी। दिल की गहराई से हो रही प्रार्थना की आवाज़ 'ताड़देव' के पूरे संकुल में गूँज रही थी कि–

'हे महाराज, हे काकाजी, हे गुरुजी ! हमसे आप ही कराना... आप ही कराना, बल देना... बल देना, सूझ देना... सूझ देना।'

यह दृश्य और इन बच्चों के अंतर से निकली प्रार्थनाभरी आवाज़ सुन कर जहां एक ओर दिल गिलगिला जैसा हो गया, तो दूसरी ओर प.पू. गुरुजी की महिमा का ख्याल पड़ता है कि आबाल-वृद्ध सभी को हर क्रिया भगवान के नाम का नमक डाल कर करने की कैसी उन्होंने आदत डाल दी है !

सच, ताड़देव का हर कण-कण मानो प्रभुभक्ति-गुरुभक्ति, आपस की आत्मीयता, सुहृद्‌भाव की खुशबू फैला रहा था– 'काकाजी-काकाजी' गूंज रहा था। ऐसा लगता था मानो महाराज, स्वामी, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज स्वयं अपने इस लाडले मानस पुत्र द्वारा किए अद्‌भुत कार्यों पर प्रसन्नता लुटाने उसकी साक्षात्कार 'स्वर्णजयंती' मनाने सारी तैयारियाँ करने में लग पड़े हों... हर छोटे से छोटे कार्य में सेवकों को भी स्पष्ट पता चलता था कि हमारी ताकत से यह हो ही नहीं सकता। कोई दिव्य शक्ति ही अनोखा बल, बुद्धि, प्रेरणा, सूझ दे रही है। जहां परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं, वहां पर भी सभी कार्य सहज ही संम्पन्न हो रहे थे। एक छोटा प्रसंग निहारें... होली के त्यौहार के दिन दुकानें बंद रहती हैं। और... उस दिन प्रदर्शनी के काम के लिए कुछ सामान की आवश्यकता थी। वह सामान लेने सेवक चांदनी चौक गया। वहां बाकी सभी दुकानें तो बंद थीं, पर एक दुकानदार किसी अन्य को कुछ माल देने सिर्फ एक घंटे के लिए उसी समय अपनी दुकान पर आया था ! इसी से वह सामान मिल गया !! बात भले छोटी-सी है, लेकिन स्पष्ट प्रतीति कराती है कि महाराज स्वयं हर एक कार्य में सहायरुप हो रहे थे।

प.पू. गुरुजी के शब्दों में तो इस उत्सव का माधुर्य कहो - मिठास कहो - श्रेय कहो–वह तो **प.पू. दीदी** को ही जाता है। वो जानती हैं कि प.पू. गुरुजी जल्दी थक जाते हैं। इससे भी अधिक **प.पू. गुरुजी को खुश व निश्चिंत देखने में ही उनके जीवन की मानो खुशी समाई है**। सो, खुद की नासाज़ तबियत में भी उन्होंने हर एक क्षेत्र में– चाहे वह कन्स्ट्रक्शन का हो, रसोई का हो, प्रिन्टिंग का हो, डेकोरेशन का हो, भजन बनाने का हो, ट्रान्स्पोर्ट व्यवस्था का हो, पंडाल व्यवस्था का हो या मुक्तों को ठहराने की व्यवस्था का हो–हर एक विभाग में जा-जा कर उन्हें मार्गदर्शन दिया...रोज़ाना वे लेट नाईट भी धर्मशालाओं में जाकर देख आतीं कि किसी को कोई तकलीफ तो नहीं या किसी चीज़ की जरुरत तो नहीं ? स्वयंसेवकों को बल देने रात को चाय-कॉफी या खाने के लिए कुछ लेकर जातीं। **प.पू. दीदी का निर्दोष हास्य व एवर फ्रेश चेहरा ही मानो सेवा के लिए सभी को बल भरता था। उनकी यही अदा हर एक को अपनापन महसूस करा देती है** कि प.पू. दीदी तो मेरी-अपनी हैं। यूं कहें कि प.पू. गुरुजी को हर तरह से निश्चिंत करके वे खुद तो प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता की पात्र बनी हीं, साथ-साथ जिन्हें सेवा का श्रेय दिया उन्हें

भी निहाल कर दिया... कैसी प्रीति, करुणा, लगाव और कृपा कही जाए ! प.पू. दीदी पर खूब राजी होकर **प.पू. गुरुजी** के मुख से भी ये आशीर्वचन सहज फिसल गए कि–

'सेवकों ने रात-दिन देखे बिना-देह को गिने बिना जो सेवा करी है, वह देख कर मेरी आँखों में पानी आ जाता... खास तो प.पू. काकाजी की खूब शोभा बढ़े उसी एक ध्येय को नज़र में रख कर मेरी मर्जी के मुताबिक सेवा में-आयोजन में दीदी ने सभी को प्रेरित किया। उसकी इसी सूझ के कारण ही यह उत्सव सभी को स्पर्श कर गया है। दीदी की भक्तिभरी कार्यदक्षता ही उत्सव का गौरव थी।'

गौरतलब है कि बहनों के भगवान भजने की व्यवस्था हेतु प.पू. काकाजी ने पहल करी और इसी ईश्यु की आड़ में वे अपमानित हुए–बदनाम हुए... **साक्षात्कार स्वर्णजयंती की इस सेवा से प.पू. दीदी और अक्षरज्योति की इन बहनों ने प.पू. काकाजी की होकर जीने वाली–मर-मिटने वाली स्त्रीशक्ति का सशक्त परिचय दिया है।**

देखते ही देखते उत्सव निमित्त दूर-सुदूर से मुक्त आने शुरु हो गए... 28 की सुबह अमदावाद से करीब 40 मुक्त 'आश्रम एक्सप्रेस' द्वारा आए... मंदिर से नज़दीक ही 'अग्रसेन धर्मशाला' जो कि एक 'गेस्ट हाऊस' जैसी सुविधायुक्त है– उसमें उनके ठहरने की व्यवस्था करी थी।

28 की शाम की 'गोल्डन टेम्पल–फ्रन्टीयर' द्वारा **पू. भरतभाई व ताड़देव के भाईयों**, पू. योगिनी बहन एवं पवाई की अन्य बहनें व मुंबई मंडल पधारा... रात को लेट नाईट प.पू. काकाजी स्वरुप **प.पू. दिनकरभाई** पधारने वाले थे। उनकी फ्लाईट लेट थी। सो, रात को करीब दो बजे वे पधारे...उनके मुख पर लेशमात्र भी थकान नहीं थी। रात को ही प.पू. गुरुजी के साथ ऊपर ठाकुरजी के हॉल में तैयार हो रही प.पू. काकाजी की मूर्तियों की प्रदर्शनी देखने वे गए... एक-एक मूर्ति एवं उसके नीचे लगे सूत्र खूब आराम से पढ़े और प्रदर्शनी देख कर खूब प्रसन्न हो गए। करीब साढ़े चार बजे सोने गए...

29 की सुबह धुलेन्डी के दिन तो रंग-बिरंगे गुब्बारों से सजा 'ताड़देव' का श्री अक्षरपुरुषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर सब का स्वागत करने अपना हर्षित रुप लिए जैसे तैयार खड़ा था। प.पू. दिनकरभाई के पधारने पर प.पू. गुरुजी एवं पू. भरतभाई, प.भ. मल्कानी साहेब, प.भ. अनिलजी वगैरह की सन्निधि में धून्य करके **प.भ. अरविंद मेहता सेठजी** ने स्वर्णजयंती की स्मृतिरुप **'स्वर्णजयंती द्वार' का उद्घाटन किया** और... सभी हरिभक्तों के जयनाद से सारा वातावरण गूँज उठा। **प.पू. गुरुजी की दिली इच्छा थी कि इस अवसर पर 'ताड़देव' में एक ऐसा स्मृतिचिह्न बने, जिससे कि गुणातीत समाज के सर्जक–'प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती' की एक चिरंजीव स्मृति यहां बनी रहे** ! यह द्वार केवल 20-25 दिन में ही प.भ. अनिलजी ने खूब परिश्रम करके खड़ा करा था... **उद्घाटन के समय खुशी से नाच उठी प.पू. गुरुजी की आँखे उनके दिल से प.भ. अनिलजी पर ढली प्रसन्नता का प्रत्यक्ष प्रमाण दे रही थी।**

तत्पश्चात् **प.भ. मल्कानी साहेब** ने ऊपर ठाकुरजी के हॉल में आयोजित **'स्वर्णस्मृति' प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।** 1997 में जब प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती मनाई गई तब भी प.पू. काकाजी महाराज की मूर्तियों की एक छोटी प्रदर्शनी लगाई थी, जिसे देख कर सभी बोल उठे थे कि यह प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती है या प.पू. काकाजी की ? प.पू. काकाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने और भक्तों को वही खुशी में डूबो देने अबकी बार भी उन्होंने प.पू. काकाजी की कई वर्षो पहले की मूर्तियों की छोटी-सी प्रदर्शनी रखी। **एक-एक मूर्ति जीवंत होकर गुणातीत समाज के हर केन्द्र के सर्जन की नींव में दबे प.पू. काकाजी का और बीती हुई आधी सदी के इतिहास का परिचय अपने आप ही दे रही थी** और उनके नीचे लिखे सूत्र सहज ही सभी को लुभा रहे थे व **कोई न कोई सूत्र हर एक के स्मृति पट पर अमिट छाप छोड़ रहा था।** मंदिर से जुड़े दिल्ली के ही आत्मीय स्वजन **प.भ. अभय जैनजी** बोले कि– **'प्रदर्शनी के हॉल में गज़ब के परमाणु थे !'** ठाकुरजी के सिंहासन के दोनों ओर निम्न दो मार्मिक सूत्र लिखे थे।

एक– **प.पू. काकाजी** की कही बात :

'सत्पुरुष के पास रांकभाव और दीनभाव रखें, वह चालाकी कही जाए;
लेकिन संबंध वाले के पास रखें, वही सच्ची मानसिक प्रमाणिकता - सिन्सियारिटी एन्ड ऑनेस्टी कही जाए।'

दूसरा– **प.पू. गुरुजी** द्वारा कही बातः

'आपणे अंगत समाज साथे एकता नथी राखी शकता ने बहारना समाज साथे एकता राखवा आतुर होईए,
तो समझवुं के अे आपणो डोळ - देखाव छे.
अने जो
आपणा अंगत समाजमां एकता राखीए, पण बहारना समाज साथे नथी राखी शकता,
तो समझवुं के अे आपणी कोई कसर छे.'

इससे भी अधिक ठाकुरजी के हॉल में दाखिल होते ही दो गेलेरीझ में बनाए गए दो छोटे कमरे मानो सभी के लिए आकर्षण के केन्द्र बने थे। दायीं ओर प.पू. काकाजी के प्रसादी के पलंग पर उनकी कटआऊट मूर्ति रखी थी और साथ ही प.पू. काकाजी की प्रसादी का कोट पहना कर प.पू. गुरुजी की भी कटआऊट मूर्ति एक शीशे के सम्मुख रखी थी। वहीं नीचे एक बोर्ड पर समझाया था कि–

1985 दिसंबर में प.पू. काकाजी जब आख़िरी बार दिल्ली आए थे,
तब प.पू. गुरुजी को अपना यह कोट पहना कर,
शीशे के आगे खड़ा करके
दूसरी ओर खड़े मुक्तों को दिखा कर बोले थे–
'ये तुम्हारे गुरुजी !'

पुराने जोगियों को प.पू. काकाजी की देन की यह स्मृति इदम् हो आई। बायीं ओर श्रीजी महाराज जूनागढ़ के नवाब को मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी की ओर उंगली से ईशारा करके जो बता रहे हैं कि हमारे जैसा ही यह फकीर यहां जूनागढ़ में रखे हैं–वह प्रसंग चित्रांकन करके वहां प्र-4 की 311वीं 'स्वामी की बात' लिख कर रखी थी कि–

कई कहते हैं कि यह तो कुछ समझता नहीं है,
इसे तो कुछ आता नहीं है,
लेकिन गद्दी पर किसने बिठाया है
उसका उसे कुछ पता भी है क्या ?
सब कुछ जानता है, तब ही गद्दी पर बिठाया है।
यह तो सत्संग में कुसंग बताया !

प.पू. काकाजी से जुड़े हर किसी का प्रदर्शनी से हटने का दिल नहीं करता था। पर, 'होली' मनाने पीछे पंडाल में सभी को पहुँचना तो था ही।

गुणातीत स्वरुपों के साथ सभी पीछे पंडाल में पहुँचे। स्टेज के पीछे लगा पर्दा दूर से देखने में ऐसा ही लगता था जैसे कि गुलाल, मजैन्टा, जामनी **रंग भरे मटके लिए आसमान स्टेज पर उतर आया** हो। सभी के विराजने के बाद होली खेलने का कार्यक्रम कुछ निराले ही ढंग से हुआ। सर्वप्रथम ठाकुरजी का पूजन करके प.पू. गुरुजी ने स्टेज पर विराजमान प.पू. काकाजी की मूर्ति को चंदन लगाया...बाजु में ही एक आसन पर निर्दोष हास्य बिखेरती प.पू. साहेब की बड़ी मूर्ति थी, क्योंकि आज तो उनकी जयंती थी... प.पू. गुरुजी व प.पू. दिनकरभाई ने एक-दूसरे को भी चंदन लगाया। इसी प्रकार पू. भरतभाई व अन्य संतों को चंदन लगा कर प.पू. गुरुजी व प.पू. दिनकरभाई ने पंक्तिबद्ध सभी हरि-भक्तों के साथ चंदन की होली खेली... दूसरी ओर बहनों के विभाग में सर्वप्रथम ठाकुरजी का पूजन करके प.पू. दीदी व प.पू. योगिनी बहन ने एक-दूसरे को चंदन लगाया और तत्पश्चात् अन्य बहनों व भाभियों के साथ खूब आनंदभरे माहौल में चंदन की होली खेली ! प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोदजी व प.भ. हेरतभाई ने तो भजनों की झड़ी लगा रखी थी। यूं खेली जा रही होली सभी मेहमानों को खूब ही स्पर्श कर गई और तकरीबन सभी के मुख से सहज ही निकल पड़ा था कि **होली तो इसी ढंग से खेली जानी चाहिए।** कई तो चेहरे पर यूं चंदन लगा देख कर मज़ाक में कहते भी थे कि– 'देखो ! सब बंदर बन गए।' लेकिन यही फर्क हमारी और गुणातीत स्वरुपों की दृष्टि में है कि सभी को चंदन लगा देख कर प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि– '**सब एक सरीखे दिखते हैं अब ! किसी के अंदर कोई फर्क नहीं दिखता–सब ब्रह्मरुप दिखते हैं...**'

सच, चंदन की खुश्बू तो मानो सारे वातावरण को अत्यधिक सुगंधित तो बना ही रही थी, साथ ही साथ संदेश दे रही थी कि चंदन की भांति खुद को घिस कर प.पू. काकाजी की व इन गुणातीत स्वरुपों की खुश्बू फैलाने निमित्त मात्र बनने का स्वर्ण मौका हमें किसी भी कीमत पर खोना नहीं है।

इस प्रकार अत्यधिक सौहार्दपूर्ण माहौल में 'दिव्य धुलेण्डी-रंगोत्सव' पूरा हुआ। यूं तो 'रंगोत्सव' के बाद 'ज्ञान-शिविर' की शुरुआत होनी थी, लेकिन यह उत्सव पूरा होते-होते दोपहर का एक बज चुका था। सो, सभी दोपहर का प्रसाद लेने सीधे '**अक्षरज्योति**' की साईट पर गए और प्रसाद लेने के बाद सभी विश्राम के लिए अपने-अपने ठहरने के स्थान पर चले गए।

और...'**ज्ञानशिविर**' की शुरुआत **प.पू. दिनकरभाई** के वरद् हस्तों से 'दीप प्रज्जवलित' करके शाम को ही हुई ! कल **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** का प्रागट्य दिन था, सो आवाह्न धून्य के पश्चात् प.भ. राकेशभाई ने '**मांगो-मांगो भगतजी आज...**' फगवा (भजन) बहुत मार्मिक प्रार्थना के रुप में गाया और... स्वर्णजयंती निमित्त **अक्षरज्योति की बहनों** द्वारा गुणातीत स्वरुपों एवं माननीय मेहमानों के लिए खास तौर से बनाए गए **सूर्यमुखी के बेज** का विवरण दिया।

बेज में सूर्यमुखी के फूल के भीतर साक्षात्कार स्वर्णजयंती का लोगो रखा था, जिसमें सर्वप्रथम–
प.पू. काकाजी को हुए साक्षात्कार के पचास वर्ष–
'१९५२-२००२'
तत्पश्चात् सूर्य में प.पू. काकाजी की इनिश्यल,
फिर प.पू. पप्पाजी के दृष्टा दिन की स्वर्णजयंती का भी यह वर्ष है–
सो उनका दिया सूत्र– 'प्रथम प्रभु ने पछी पगलुं.' अंकित था।
इस सूत्र के नीचे–
50 अंक के साथ–
गुणातीत समाज के ध्वज का समावेश किया था
और
'साक्षात्कार स्वर्णजयंती' लिख कर
महोत्सव का परिचय दिया था।

'सूरजमुखी' के फूल के आकार में बनाने के पीछे सांकेतिक भावना यही थी कि जैसे सूरजमुखी के फूल की नज़र केवल सूर्य की ओर निरंतर होती है, सूर्य की किरणें ही उसके जीवन का प्राण होता है, वैसे ही प.पू. गुरुजी का रोम-रोम केवल प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने व उनकी शान बढ़ाने ही हमेशा लालायित रहता है। सभी स्वरुपों को बेज व उसकी भावना खूब पसंद आई थी।

पू. कांतिकाका जिन्हें प.पू. काकाजी हमेशा '**सत्संग के सरदार**' कहते व प.पू. गुरुजी जिन्हें **गुणातीत समाज के प्रथम आत्मीय** के रुप में याद करते हैं; वे यदि होते तो इस उत्सव और आत्मीयता, सुहृद्‌भाव व दिव्यता से भरे माहौल को देख कर खूब राजी होते... और वे तो **प.पू. काकाजी की अविभक्त आत्मा** ! इन्हें प.पू. गुरुजी कैसे भूलेंगे ? अपनी भावना को अभिव्यक्ति देने प.पू. गुरुजी ने इस उत्सव निमित्त लगाया गया अपना बेज पू. कांतिकाका के प्रतिनिधि रुप **पू. घनश्यामभाई** को लगाया और दूसरी ओर **पू. मम्मीबा** इस उत्सव में उपस्थित नहीं रह पाए थे, सो उनके स्थान पर प.पू. दीदी ने **सौ. इलाभाभी** को अपना बेज लगाया। यूं एक ओर यह मंगलकारी उत्सव अपनी अनोखी सुवास फैला रहा था, तो दूसरी ओर प.पू. गुरुजी की आँखें गुणातीत समाज की नींव में डटे पू. कांतिकाका, पू. मम्मीबा जैसों की अडिग निष्ठा कुर्बानी, भक्ति, सेवा याद करते कई बार नम हो रही थीं।

बेज अर्पण विधि के बाद प.पू. गुरुजी ने 'ज्ञानशिविर' की भावना बहुत ही सरल व मार्मिक शब्दों में समझाते हुए सभी को याद दिलाया कि–

रिद्धि-सिद्धि, वैभव के आकर्षणों एवं क्रियायोगों में ना फंस कर हमें जल्द से जल्द अपनी पूर्णाहुति करवा लेनी है।

इसके बाद पू. भरतभाई ने प.पू. काकाजी महाराज की मूर्ति का पूजन करके हार अर्पण किया। प.पू. साहेब की जयंती का मंगलकारी दिन था, सो प.भ. वालिया साहेब ने प.पू. साहेब की मूर्ति का भी पूजन करके हार अर्पण किया। और... प.भ. वैभव जानी व प.भ. चिंतन अग्रवाल ने स्टेज पर विराजमान सभी स्वरुपों एवं विशिष्ट मेहमानों को कलगी अर्पण करके स्वागत किया।

स्वागत के पश्चात् प.भ. पुनीतजी (पानीपत) और प.भ. पुरी साहेब ने अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करते हुए प्रासंगिक उद्‌बोधन किया... तत्पश्चात् शिविर के इस पहले सत्र में प.पू. काकाजी की परावाणी का सभी ने लाभ लिया और प.पू. दिनकरभाई ने बहुत सुंदर ढंग से उसका निरुपण करा। उन्होंने तो प.पू. काकाजी का यह आशीर्वचन पहली बार सुना, सो उसमें वे खूब मग्न हो गए। प.पू. दिनकरभाई के निरुपण के बाद प.पू. काकाजी की कृपापात्र **पू. योगिनी बहन** को अबकी बार 50 वर्ष पूरे हो रहे थे, सो उनके ही वरद् हस्तों से 'साक्षात्कार स्वर्णजयंती' निमित्त स्मृति रुप बनाए चांदी के सिक्के का उद्‌घाटन किया गया और बाद में स्टेज पर विराजमान सभी स्वरुपों व माननीय अतिथियों को यह स्मृतिभेंट अर्पण करी गई। तत्पश्चात् प.भ. तपन मजूमदारजी के दामाद प.भ. प्रसन्नजीतजी की 'स्वामिनारायण' धून ने सभी को भावविभोर कर दिया।

29 की शाम तो पूरा 'ताड़देव' मंदिर रोशनी से जगमगा उठा। लुभावनी झिलमिलाती 'राष्ट्रपति भवन' जैसी करी हुई यह लाईटिंग भक्तों के मन को तो आनंदित कर ही रही थी, पर सड़क पर से गुजरते हुए हर एक को अपनी ओर सहज ही आर्कषित कर रही थी इतना ही नहीं– बल्कि दो मिनिट तो खड़े होकर देखने को जैसे मजबूर कर रही थी। पीछे प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' को दीये जला कर सजाया गया था... जो इस बात का संकेत दे रहे थे कि जाने-अनजाने जो भी संबंध में आया, उसके जीवन में प.पू. काकाजी ने हर प्रकार से सुख, शांति व आनंद की '**दीवाली**' ही प्रगटाने का आखिरी सांस तक प्रयास किया था !

सभा के अंत में विर्सजन प्रार्थना के साथ सभी ने प्रस्थान किया और दूसरे दिन के सत्र में आध्यात्मिक भोजन पाने के मंसूबे लिए सभी प्रसाद लेने गए।

30 मार्च की सुबह स्टेज का नज़ारा ही अलग था। '**प.पू. काकाजी के साक्षात्कार**' की स्मृति कराने के हेतु से आज **गोंडल मंदिर** के कटआऊट का पर्दा बनाया था। उसके आगे आसन पर प.पू. काकाजी की मूर्ति का कटआऊट रखा था, जो कि खूब मार्मिक लगता था और बार-बार एहसास कराता था कि–

आज हम सभी जो गुणातीत समाज में दिखाई पड़ रहे हैं, वो इसी गोंडल मंदिर में प.पू. काकाजी को हुए साक्षात्कार की देन है। **उन्हीं के कारण ही तो आज गुणातीत समाज का अस्तित्व दिखाई पड़ रहा है। सो, हम कभी भी 3 फरवरी का यह दिन भूलें नहीं।**

प.भ. विनोद (पंजाब) ने '**काका तेरी कुर्बानी**' भजन से इस सभा की शुरुआत करी और... प.भ. घनश्यामभाई ने प.पू. काकाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया।

प्रांसगिक उद्‌बोधन में प.भ. प्रभाकरभाई ने प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के साथ के अपने अनुभव व्यक्त किए। तत्पश्चात् प.भ. राकेशभाई ने गोंडल मंदिर की विशेषता बताई... और प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी (पंजाब) व प.भ. एन.के. अग्रवालजी ने प.पू. काकाजी के प्रति अपने भाव प्रकट किए...

शिविर के इस द्वितीय सत्र में प.पू. काकाजी की परावाणी का सभी ने लाभ लिया और प.पू. गुरुजी ने बीच-बीच में समझाया कि हम से वे क्या कराना चाहते थे और वह करने हम **अब 16 साल के बाद तो**

जाग्रत बनें ! इसी बीच प.पू. गुरुजी ने प.पू. दिनकरभाई को भी समझाने कहा और फिर वही प.पू. काकाजी की परावाणी ज़ारी रखते हुए प.पू. गुरुजी ने साधना मार्ग में अड़चन डालते हमारे प्रकृति-स्वभाव-दोषों का दर्शन करा कर सुबह के इस सत्र की पूर्णाहुति करी।

30 की सायं फिर सभी 'ताड़देव' में इकट्ठे हो गए। इस उत्सव में सभी को बहुत कुछ पा लेने की कितनी उत्कंठा होगी कि शिविर की हर सभा में सभी समय से पहले पहुँच जाते और आश्चर्य की बात तो यह थी कि चार-चार घंटे सभा चल रही थी, लेकिन किसी के मुँह पर थकान का नामोनिशान नहीं था।बल्कि अत्यधिक उमंग-उल्लास से भरपूर खूब फ्रेश दिखाई पड़ते थे। आवाह्न धून्य-भजन से सभा की शुरुआत हुई। प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की तथा पू. निर्मलस्वामिजी ने प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को पू. कोठारीस्वामिजी द्वारा लाए गए मोगरे का हार अर्पण किया। पू. कोठारीस्वामिजी, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. माधवस्वामिजी, पू. वशीभाई तथा पू. राजुभाई ठक्कर आज ही आए थे और धुलेन्डी के उत्सव में मौजूद नहीं थे; सो प.पू. गुरुजी ने सखाभाव से इन सभी के साथ चंदन से प्रेमभरी होली खेली। पू. वशीभाई से अत्यधिक प्रेम होने के कारण प.पू. गुरुजी ने तो उन्हें चंदन से मानो पूरा नहला दिया था। तत्पश्चात् प.पू. स्वामिजी सभा में पधारे। पू. राजुभाई ठक्कर ने प.पू. काकाजी की मूर्ति को तथा पू. मल्कानी साहेब ने प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया। प.पू. स्वामिजी को प.भ. अरविंद मेहता सेठ ने हार अर्पण किया।

हम सभी जानते हैं कि **पू. निर्मलस्वामिजी** को प.पू. काकाजी के प्रति अत्यधिक लगाव है व उनके द्वारा जीया गया जीवन उन्हें खूब स्पर्श कर गया है। यह महिमा-भावना उनके द्वारा किए जाते प्रवचनों में स्पष्ट छलकती है... संयोगवश पू. निर्मलस्वामिजी की भागवती दीक्षा का भी यह स्वर्णजयंती वर्ष है... प.पू. गुरुजी व दिल्ली के भक्त इस मंगल अवसर पर भक्ति अदा करने भला कैसे चूकते ? सो, प.भ. पुरी साहेब ने उन्हें सभी की ओर से विशेष रुप से हार अर्पण किया !

आज प.भ. भाविनभाई (अमदावाद) के सुपुत्र पू. रुद्र का जन्मदिन था, सो प.पू. गुरुजी ने उसे भी एक गिफ्ट दी।

तत्पश्चात् पू. कोठारीस्वामिजी ने प्रासंगिक उद्बोधन करके प.पू. काकाजी की खूब अच्छी स्मृति कराई ! फिर, पू. निर्मलस्वामिजी जो कि प.पू. काकाजी के साक्षात्कार के समय वहीं हाज़िर थे, उन्होंने तब का एकदम सजीव मार्मिक दर्शन कराया ! ताड़देव के योगेश्वर और प.पू. काकाजी के 'बचुड़िया' पू. वशीभाई ने भी अपने भाव व्यक्त करके प.पू. काकाजी की खूब स्मृति कराई... प्रासंगिक उद्बोधन के इस कार्यक्रम के दौरान अमदावाद के प.भ. भाविनभाई व प.भ. समीरभाई के सुपुत्र रुद्र-नंदिश ने स्टेज पर बैठ कर सभी स्वरुपों की वंदन-स्तुति के श्लोक सुनाए।इन बच्चों का यूं सारे श्लोक याद रखना भी प.पू. गुरुजी के एक अद्भुत सर्जन को दर्शाता है कि आज के इस युग में जहां बच्चों की जुबान पर फिल्मों के गाने चढ़े रहते हैं, उसकी बजाय ये पाँच-छः साल के बच्चों को श्लोक इतने मुँहजुबानी हैं।बच्चों के श्लोक बोलने के बाद प.भ. वच्छराजभाई ने प्रासंगिक उद्बोधन किया...

प्रासंगिक उद्बोधन के बाद प.भ. राकेशभाई ने गुजराती में एक विशेष भजन '**आज दोढ़-दोढ़ दायकाना व्हाणा वही गया...**' गाया।

तत्पश्चात् प.पू. स्वामिजी ने अपनी परावाणी द्वारा आशिष बरसाते हुए कहा कि–'...**समाधि का मतलब निर्दोषबुद्धि– इस बारे मैं कल समझाऊँगा।**' ऐसी प्रभुधारक विभूतियों की वाणी वाकई आशीर्वादरुप ही होती है, यह अनुभव सभी ने दूसरे दिन किया जब प.पू. स्वामिजी के इन आशीर्वचन ने पूरे समाज को श्री महेन्द्र कपूरजी और श्री रोहन कपूर के भजनों द्वारा जैसे समाधि में ही रख दिया ! जैसे कि सभी को समाधि का साक्षात्कार करा दिया !

अंत में **प.पू. स्वामिजी के कर कमलों से** 'स्वामीनी वातो' का हिन्दी अनुवाद– '**ब्रह्मविद्या**' का उद्घाटन हुआ और **पू. कोठारीस्वामिजी** ने भजनों के नए संग्रह '**स्वर्णस्वर**' का उद्घाटन किया ! उद्घाटन विधि होने के बाद भजन तथा विर्सजन प्रार्थना के साथ शिविर के इस सत्र का भी समापन हुआ और सभी प्रसाद लेने के लिए चल पड़े।

पू. योगिनी बहन की 50वीं वर्षगाँठ थी, सो 30 की रात 12 बजे प.पू. दिनकरभाई, पू. भरतभाई के सान्निध्य में प.पू. दीदी व अन्य बहनों भाभियों ने एक छोटा-सा घरेलू उत्सव किया-आनंद किया-स्मृतियाँ इकट्ठी करीं।पू. भरतभाई ने दिल्ली की भाभियों की ओर से पू. योगिनी बहन को प.पू. काकाजी की ट्रांस्लाईट भेंट दी।

भक्तों का हर कष्ट प्रभु टाल दें और संबंध वाले सभी मुक्त तन, मन, धन एवं आत्मा से सदा सर्वदा सुखी-सुखी रहें, इस मंगलकारी भावना से **31मार्च की सुबह** स्टेज पर '**महापूजा**' करी गई।पू. निमित्तस्वामी व पू. वशीभाई के भजन व श्लोक उच्चारण से पूरा पंडाल गूंज उठा... प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, पू. कोठारीस्वामिजी, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. भरतभाई इन सभी की हाज़िरी में हुई महापूजा का वातावरण कुछ अनोखा ही लग रहा था।सभी को दिव्यता-पवित्रता का अनुभव हो रहा था।

महापूजा के समापन के बाद आज 'ज्ञानशिविर' की सभा की पूर्णाहुति थी।अंतिम सत्र में भी स्टेज पर आज गोंडल मंदिर का ही दर्शन हो रहा था। 'स्वामिनारायण भज मन प्यारे...' भजन के स्वर से

स्मृतिस्थल पर ......

स्वर्णजयंती द्वार

होली तो इसी ढंग से खेली जानी चाहिए ....

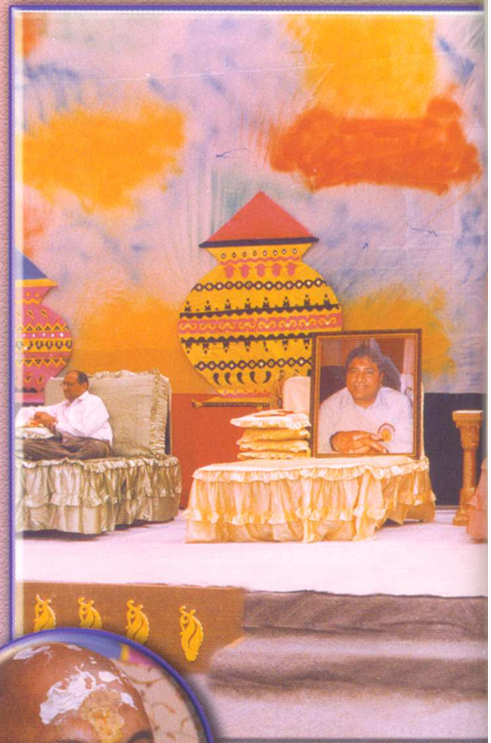

२९.०३.२००२

प.पू. काकाजी के कारण ही तो
आज गुणातीत समाज का
अस्तित्व दिखाई पड़ रहा है।
सो, हम कभी भी ३ फरवरी का
यह दिन भूले नहीं !

३०.०३.२००२

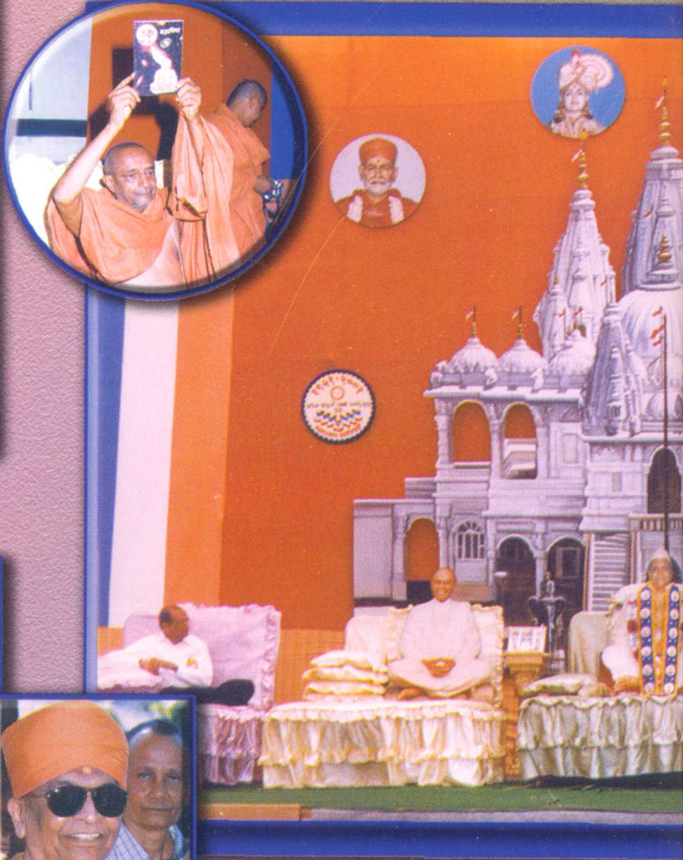

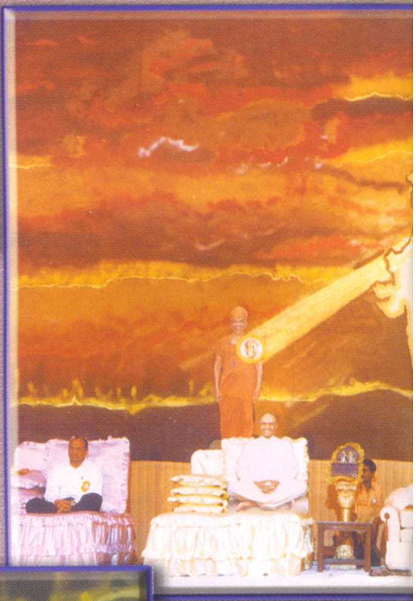

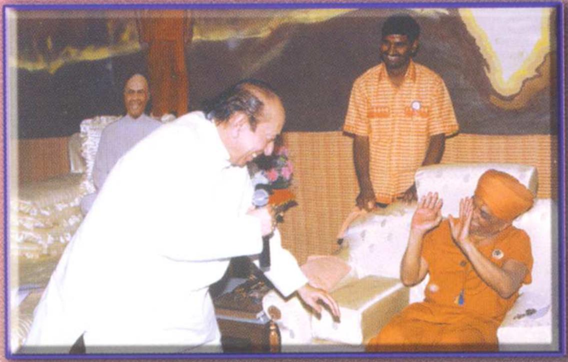

३१ की शाम को तो ....

.... सारा पन्डाल इलेक्ट्रिफाई हो गया !

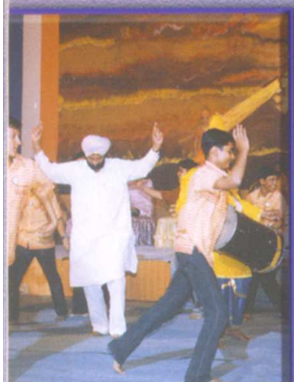

श्री अक्षरपुरूषोत्तम (स्वामिनारायण) मंदिर

स्वर्णस्मृति ……

1985 दिसंबर में
प.पू.काकाजी जब आखिरी बार दिल्ली आए थे
तब प.पू.गुरुजी को अपना यह कोट पहना कर
शीशे के आगे खड़ा करके
दूसरी ओर खड़े मुक्तों को दिखा कर बोले थे
'ये तुम्हारे गुरुजी !'

प.भ. विनोद ने सभा की शुरुआत करी। इसी बीच प.पू. स्वामिजी सभा में पधारे और प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को प्रणाम करके आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् प.भ. विनोद ने प.पू. काकाजी पर रचित भजन– 'जय-जय काकाश्री महिमा तेरी हम सब हर पल गाएं...' गाया। प्रासंगिक उद्‌बोधन में सर्वप्रथम प.पू. काकाजी को जिन्होंने खूब नज़दीक से निहारा-उनके साथ रहे, ऐसे प.भ. घनश्यामभाई अमीन ने अपने अनुभव-भावनाएं व्यक्त करीं ! तत्पश्चात् पू. भरतभाई ने अपने उद्‌गार कहे। फिर शिकागो मंडल की ओर से प.भ. केतनभाई ने प.पू. काकाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया। ताड़देव-मुंबई मंडल की ओर से पू. अश्विनभाई ने तथा उत्तर के गुणातीत समाज की ओर से प.भ. झांझी साहेब (जगरांव) ने प.पू. काकाजी की मूर्ति को हार अर्पण किया। हार अर्पण विधि के बाद प.भ. हेरतभाई ने प.पू. गुरुजी को प्रार्थना करता भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् दिल्ली गुणातीत समाज से भली-भाँति परिचित **माननीय श्री मांगेराम गर्गजी** भी इस उत्सव में पधारे और प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के प्रति चंद शब्दों में अपने भाव प्रकट किए। इनके बाद पू. विज्ञानस्वामिजी जो कि प.पू. गुरुजी के साथ खूब सखाभाव से जुड़े हैं, उन्होंने सभी को संबोधित किया... इसी बीच प्रसिद्ध गायक एवं हमारे आत्मीय स्वजन से बन गए **श्री महेन्द्र कपूरजी** अपने सुपुत्र **श्री रोहन कपूर** एवं समधि **श्री वी.वी. मल्होत्राजी** के साथ खास इसी उत्सव के लिए पधारे... प.पू. गुरुजी ने उनका स्वागत किया।

साक्षात्कार की स्वर्णजयंती निमित्त भजन बनाने जब **'महाभारत' सीरियल के टाईटल सोंग** व **'क्रांति'** फिल्म के गाने के राग के लिए प.पू. गुरुजी को पूछने गए, तो दोनों राग उन्हें बहुत पसंद आए और पूछा कि ये ओरिजीनली किसने गाए हैं ? पता करने पर मालूम हुआ कि **श्री महेन्द्र कपूरजी** द्वारा गाए गए हैं। तब प.पू. गुरुजी एकदम ही बोले कि तो फिर मुंबई में ओ.पी. को बोलो कि– वो महेन्द्रजी से सम्पर्क करें। अगर फंक्शन में वे भजन गाने दिल्ली आएं तो खूब अच्छा रहेगा।

प्रभु रखे संत की तो रीत ही निराली ! उनकी एक आज्ञा कईयों के मनोरथ-संकल्प पूरे करे और भीतर में सुख प्रगटाए। मुंबई में प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी व परिवार मन में बहुत फील कर रहा था कि प.पू. काकाजी की स्वर्णजयंती पर दिल्ली के सभी भक्त अपनी भक्ति अदा करने दिन-रात सेवा कर रहे हैं और हम दूर रहते हैं, सो कुछ भी सेवा नहीं कर पा रहे। प.पू. गुरुजी ने मानो अन्तर्यामी रुप से उनकी यह भावना -संकल्प पकड़ कर श्री महेन्द्र कपूरजी को मिलने-करने की सेवा दी। जैसे ही प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी को मैसेज मिला, वे खूब ही खुश होकर बोले कि अहोहो ! प.पू. गुरुजी ने मेरे मन के इस संकल्प को पकड़ कर मुझे यह सेवा सौंपी ! प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी तो श्री महेन्द्र कपूरजी से सम्पर्क करने की भागदौड़ में लग गए। श्री महेन्द्रजी के भी पूर्व के बलिष्ठ संस्कार कहो या प.पू. गुरुजी की दृष्टि कहो या प.पू. काकाजी अपनी स्वर्णजयंती की सेवा देकर निहाल करना चाहते होंगे, सो उन्होंने भी **पहली मुलाकात में ही बहुत ही अपनेपन से वहां से गुरुजी को फोन पर एकदम हाँ भर दी कि मैं जरुर आऊँगा।**

प.भ. ओ.पी. अग्रवाल खुद भी भीतर में स्पष्ट समझ गए थे कि यह कार्य मेरे द्वारा नहीं हो रहा, बल्कि कोई और ही शक्ति अपने आप करा रही है। प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी द्वारा प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी की महिमा व अनुभव सुन कर श्री महेन्द्र कपूरजी बहुत प्रभावित हुए और अपने सुपुत्र श्री रोहन के साथ एक 'आत्मीय स्वजन' की भांति 31 मार्च की सुबह दिल्ली पहुँच गए !

प.पू. गुरुजी ने इस सारे प्रसंग को देखते हुए एक प्रसंग बताया कि जब 'मारा अंतर महोलना' भजन बना था, तब प.पू. काकाजी स्थूल रुप से हाज़िर थे और मैंने उन्हें प्रार्थना करी थी कि इस राग का गाना ओरिजीनली हेमलताजी ने गाया है; क्यों ना उन्हीं से यह भजन गवाया जाए ? और उस समय प.पू. काकाजी की हाज़िरी में ही हेमलताजी से वह भजन गवाया था।

जब श्री महेन्द्रजी ने भजन गाने हाँ करी, तब प.पू. गुरुजी ने यह सारा प्रसंग याद करते हुए कहा कि– महेन्द्रजी का भजन गाने दिल्ली आना महज इत्तफाक नहीं है, बल्कि प.पू. काकाजी हमें प्रतीति कराना चाहते हैं कि जैसे स्थूल रुप में होते हुए तुम्हारे सारे मनोरथ पूरे करता था, अभी भी वैसे ही मैं तुम्हारे मनोरथ पूरे करता हूँ - करता रहूँगा !

अंत में प.पू. स्वामिजी ने आशिष वर्षा करते हुए प.पू. काकाजी के किए परिश्रम के फलस्वरुप व प.पू. गुरुजी की गुरुभक्ति अदा करने की जुंबिश से आज दिल्ली की धरती पर एक अद्‌भुत समाज के सर्जन हुए पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करी। और... प.पू. काकाजी द्वारा दिए गए 'भुलका' शब्द का अर्थ समझा कर सभी को उस ओर अग्रसर होने के लिए मार्गदर्शन दिया। यूं प.पू. स्वामिजी की परावाणी के साथ ही शिविर की पूर्णाहुति हुई और समापन प्रार्थना करके सभी दोपहर का प्रसाद लेने गए।

31 मार्च की सायं यानि– प.पू. गुरुजी के 65वें प्रागट्य दिन के उत्सव का अनमोल अवसर... सायं की इस सभा का मंच ही एक महत्त्वपूर्ण आशीर्वाद की व्याख्या कर रहा था। 1986 में 25 जनवरी को हरिधाम के प्रांगण में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी एवं पू. कोठारीस्वामिजी को आशीर्वाद दिए थे कि– 'आकाश का वह सूर्य, यह सूर्य (यानि– प्रगट गुणातीत स्वरूप) और तुम्हारे हृदयाकाश का सूर्य यानि– प.पू. गुरुजी के हृदय में

विराजमान प्रभु—जाओ तीनों एक !' इसी आशीर्वाद को मद्देनज़र रखते हुए पर्दे पर आकाश में विद्यमान सूर्य में श्रीजी महाराज की मूर्ति और उसमें से निकलती किरणें भारत के नक्शे पर स्थित सूर्यस्वरूप प.पू. काकाजी की मूर्ति पर पड़ रही थीं और प.पू. काकाजी की मूर्ति से निकलती किरणें प.पू. गुरुजी की मूर्ति के हृदयाकाश— जहां कि सूर्य के गोलाकार में प.पू. काकाजी की मूर्ति दिखाई थी, उस पर पड़ रही थीं।

प.पू. काकाजी की पुष्प समाधि पर संतों के साथ प्रदक्षिणा करके प.पू. स्वामिजी—प.पू. गुरुजी, पू. निर्मलस्वामिजी, पू. कोठारीस्वामिजी तथा अन्य मुक्तों के साथ सभा मंडप की ओर अग्रसर हुए... '**स्वामिनारायण**' नाम से अंकित शर्ट व काली पेन्ट पहने स्वयंसेवक दोनों तरफ पक्तिबद्ध होकर उन्हें पंडाल तक लेकर आए और वहां '**मोबाईल**' ड्रेस पहने छोटे बच्चों ने उनका फूलों से स्वागत किया... '**कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...**' भजन से सभा की शुरुआत हुई। तत्पश्चात् प.भ. राकेशभाई ने बच्चों के 'मोबाईल' ड्रेस पहनने के पीछे की भावना समझाई कि—

'**कुछ दिनों पहले प.पू. गुरुजी ने एक रहस्य की बात बताई थी कि गुणातीत स्वरुप लेन्ड लाईन फोन जैसे हैं। श्रीजी महाराज को-प्रभु को इनका फोन हमेशा लगता है; क्योंकि इसमें कभी पॉवर जाती नहीं है। पॉवर इज़ कोन्सटन्ट एण्ड कोन्टीन्यूअस और हम सब जो साधक हैं वे मोबाईल फोन जैसे हैं। मोबाईल फोन का भी फोन तो लगता है, लेकिन उसकी जो बैटरी है वह डिस्चार्ज होती रहती है और उस बैटरी को चार्ज करते रहना साधक के लिए अनिवार्य है। हम वो चार्ज कैसे करें ? रोज़ सुबह और शाम अपना नियमित भजन करें तो हमारी बैटरी चार्ज रहेगी। ये छोटे-छोटे बच्चे हमारा ही रुप हैं—साधकों का। सो, हम नियमित भजन करके अपनी बैटरी चार्ज रखे ऐसी प्रार्थना !**'

तत्पश्चात् दिल्ली व पंजाब के युवकों ने '**स्वागत भाँगड़ा**' प्रस्तुत किया जो कि संदेश दे रहा था कि प.पू. काकाजी ने रेत में ज़हाज़ चलाने जैसा दुष्कर कार्य करके दिल्ली-हरियाणा-पंजाब में सत्संग की नींव डाली और हमें भेंट में प.पू. गुरुजी दिए... भाँगड़ा करने वाले बच्चों की प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के प्रति की भक्ति, उमंग, उत्साह देखते ही बनता था। पंडाल में बैठे इन बच्चों के माँ-बाप के मन में विचार चल रहे थे कि **आज इन बच्चों के जीवन में प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत हैं, सो हमें कितनी निश्चिंतता है। वर्ना तो इस कलियुग में हमारे बच्चे...?** स्वागत भाँगड़े ने सभी में खूब जोश से भर दिया कि प.भ. बरार साहेब (जगरांव) भी प.पू. गुरुजी के प्रति अपना भाव व्यक्त करने उन युवकों के बीच उतर आए...

स्वागत भाँगड़े के बाद सर्वप्रथम प.भ. कानजीभाई (राजकोट) ने प्रासंगिक में सभी को संबोधित किया। फिर 'महाभारत' सीरियल के टाईटल गीत पर आधारित नया भजन '**गाथा दादुकाका की...**' प.भ. राकेशभाई ने गाया। भजन के बोल सभी के रोंगटे खड़े कर रहे थे... भजन के पश्चात् पू. दासस्वामिजी, प.भ. अजय मल्कानी, प.भ. बरार साहेब (जगरांव), प.भ. कालिया साहेब (अमृतसर) ने प्रासंगिक उद्बोधन करके अपने उद्गार कहे।

और... फिर दिल्ली के युवक मंडल ने प.पू. गुरुजी की विभिन्न अदाओं, विशेषताओं पर आधारित '**डांडिया रास**' प्रस्तुत किया, जिसके बोल थे—'**मूर्ति का आनंद अंतर में समाए ना...**'। इसे देख कर सारा मुक्त समाज तो मुग्ध हो ही गया, परंतु इससे भी अधिक **प.पू. स्वामिजी की प्रसन्नता का छोर नहीं रहा।** उत्सव के एक-दो दिन बाद जब वे प.पू. गुरुजी को मिले, तब भी उन्होंने 'डांडिया रास' को याद करके खूब प्रसन्नता बताई कि बच्चों ने मूर्ति में लय-लीन होकर अपने भाव प्रकट किए...

हमें जो प्राप्ति हुई है उसकी महिमा जब हम नहीं समझते, तब प्रभु किसी और से बुलवा कर हमारे कान खींचते हैं। इस बात का अनुभव हमें इस उत्सव में भी हुआ। एक भाई साहेब स्वामिनारायण मार्ग से ऐसे ही जा रहे थे। बोर्ड देख कर उन्हें सहज ही हुआ कि चलो यह मंदिर तो देखें... और वे अंदर प.पू. गुरुजी के पास आए। प.पू. गुरुजी ने साक्षात्कर स्वर्णजयंती के उत्सव में आने के लिए निमंत्रित किया। इत्तफाक से वे भाई साहेब दिल्ली दूरदर्शन में कार्यरत हैं। सो, उन्होंने तुरंत ही प.पू. गुरुजी को कहा कि हम आपका प्रोग्राम **दिल्ली दूरदर्शन** के चैनल पर प्रसारित करेंगे। सो, उनकी टीम ने यह सभा, डांडिया रास तथा जगमगाते स्वामिनारायण मंदिर के दृश्य खींच कर बाद में प्रसारित किए थे। साथ ही 30 तारीख को प.पू. स्वामिजी एवं प.पू. गुरुजी का संक्षिप्त संदेश भी दिल्ली आकाशवाणी ने फोन पर रिकॉर्ड किया, जिसे 31 की सुबह रेडियो पर प्रसारित किया गया। दूसरी ओर **आस्था चैनल** के लिए '**बीटा रिकॉर्डिंग**' करने आए कैमरामेन को गाईड करते हुए प.भ. वच्छराजजी ने सहज ही पूछा कि आप यहां बोर तो नहीं हो रहे ? तो वे पटाक से बोले कि—

'**अरे ! क्या बात कर रहे हो ? नेपाल तक के बड़े-बड़े प्रोग्राम्स के लिए भी हम गए हैं—जाते हैं, इवन पी. एम. हाऊस भी प्रोग्राम्स के लिए गए हैं, पर यहां कुछ और ही है ! ऐसा कार्यक्रम हमने कहीं देखा नहीं है।**'

ऐसी बातों के लिए प.पू. गुरुजी अक्सर कहते हैं कि **प.पू. काकाजी आखिर-आखिर में मंदिर की इस जमीन पर जब आए थे, तब कुछ ऐसा कर गए कि जो भी आता है उसे यहां शांति महसूस होती है।** अब यह हमें समझना है कि हमने क्या पाया है ? और उसे कितना संजोया है ?

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के आशिष पाने की

एनाउन्स्मेन्ट तो हुई, लेकिन किसी कारणवश शायद प.पू. गुरुजी ने ही नज़रअंदाज़ कर दिया और मुंबई मंडल की ओर से प.भ. हेमंत मर्चंट द्वारा प.पू. गुरुजी के लिए बनाया भजन **'योगीजी की आस गुरुजी, काकाजी के ख्वाब हो...'** प.भ. विनोद व प.भ. हेरतभाई ने गाया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी की जयंती के लिए खास आए **भूतपूर्व गर्वनर श्री रमेश भंडारी साहेब** ने अपना प.पू. गुरुजी के साथ का संबंध सभा के साथ बांटा... और इनके बाद प.पू. काकाजी के प्रति व प.पू. गुरुजी के प्रति एक अनोखे लगाव के वश मुंबई से खास इस दिन के लिए आए **(हमारे माननीय मेहमान कहें या आत्मीय स्वजन ?) श्री महेन्द्र कपूरजी ने अपनी भावनाएं व्यक्त करीं...** साथ ही प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी ने श्री महेन्द्र कपूरजी का परिचय देते हुए प.पू. गुरुजी की महिमा का दर्शन कराया। फिर **प.भ. मल्कानी साहेब** ने भी प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के प्रति लगाव-प्रीति का ख्याल देते हुए खूब ज़ोर से प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी की जय बुलवाई... और इसके बाद तो **श्री महेन्द्र कपूरजी व उनके सुपुत्र श्री रोहन कपूर ने** प.पू. काकाजी पर आधारित प.पू. दीदी व प.भ. राकेशभाई द्वारा रचित भजनों की झड़ी लगा कर, साथ ही देशभक्ति के गीत सुना कर **सारे पन्डाल को मानो इलेक्ट्रिफाई कर दिया...** सभी की सुध-बुध भुला दी और यूं लगने लगा कि बस यह रात खत्म ही ना हो... ऐसे ही इन गुणातीत स्वरुपों के सान्निध्य में सारी उम्र गुज़र जाए... श्री महेन्द्र कपूरजी व उनके सुपुत्र श्री रोहन को भी 'ताड़देव' का सारा माहौल, उत्सव और विशेष रुप से प.पू. गुरुजी की सहजता इतनी स्पर्श कर गई कि पौने एक घंटे तक अत्यधिक उमंग-उल्लास व खूब जोश से भजनों व देशभक्ति के गीत गाकर स्टेज पर बैठे **गुणातीत स्वरुपों, संतों, महानुभावों** व **पूरे सभा मंडप को झूमता कर दिया** ! समय का तो किसी को जैसे कुछ ख्याल ही नहीं रहा था। **प.पू. गुरुजी की सहजता** और अपनेपन से प्रभावित होकर श्री महेन्द्र कपूरजी ने अपने समधि श्री मल्होत्राजी के घर पर कहा भी कि–**'वहां मुंबई, गुजरात, मद्रास, पंजाब, हरियाणा और विदेश तक से–दूर-दूर से जो आए हैं, इन सबको इस साधु (प.पू. गुरुजी) ने एक कुनबे की भाँति बांध रखा है...'**

भजन पूरे होने के बाद श्री महेन्द्र कपूरजी और श्री रोहन को प.पू. स्वामिजी के पास ले जाकर प.पू. गुरुजी ने कहा कि– **'स्वामिजी ! ये कोई प्रोफेशनल कॉन्ट्रेक्ट पर नहीं आए हैं। एक प्यार और मोहब्बत का रिश्ता बना है। आपने देशभक्ति के गीत व परोक्ष के भजन बहुत गाए हैं। फलस्वरुप आज प्रगट प्रभु की भक्ति का भजन गाने का मौका मिला है। हम साधु लोग तो आपको क्या दे पाएंगे ? पर, स्वामिजी हमारे ऐसे साधु हैं जिन्होंने 'भगवान स्वामिनारायण' अखंड रखे हुए हैं ! मैं चाहूँगा कि आप आए हो, तो यहां से भगवान लेकर जाओ। सो, स्वामिजी आपको कंठी देते हैं। रोहन को भी देनी है। यह एक रक्षा कवच है जो हमेशा आपकी रक्षा करता ही रहेगा...'**

श्री महेन्द्रजी ने भी खूब विनम्रभाव से कहा: मुझे चाहिए भी कुछ नहीं, बस आपका आशीर्वाद चाहिए।

श्री महेन्द्रजी के भजन के कार्यक्रम के बाद **प.पू. स्वामिजी** ने खूब प्रसन्नता बताते हुए आशिष वर्षा करके इस सभा को साक्षात् अक्षरधाम की सभा बता कर सभी को अक्षरधाम के सुख का अनुभव करा दिया !

प.पू. स्वामिजी की आशिष वर्षा के बाद हार अर्पण का कार्यक्रम शुरु हुआ।

सर्वप्रथम प.पू. पप्पाजी की मूर्ति को–
प.भ. संघवी साहेब ने हार अर्पण किया।
फिर, प.पू. स्वामिजी को प.भ. दालिया साहेब ने,
प.पू. दिनकरभाई को प.भ. पुनीतजी (पानीपत) ने,
पू. भरतभाई को प.भ. विजयपालजी ने,
पू. निर्मलस्वामिजी को प.भ. चिंतन ने
और
पू. कोठारीस्वामिजी को प.भ. कपिल ने हार अर्पण किया।

प.पू. गुरुजी को सर्वप्रथम दिल्ली मंदिर के संत-साधक मंडल की ओर से पू. निमित्तस्वामी व पू. अक्षरस्वामी ने तीन सूर्य एक होने के प.पू. काकाजी के आशीर्वाद दर्शाता कार्ड अर्पण किया और पू. सुहृद्स्वामी तथा पू. संकल्पस्वामी ने इस प्रार्थना के साथ हार पहनाया कि जिस तरह प.पू. गुरुजी के हृदयाकाश में प.पू. काकाजी अखंड रहे हैं, वैसे ही हमारे हृदयाकाश में प.पू. गुरुजी अखंड रहें।

संतों के हार अर्पण के बाद अक्षरज्योति की बहनों की ओर से प.भ. पुरी साहेब ने **'बंसरी थीम'** से अंकित हार इस प्रार्थना के साथ अर्पण किया कि –**'बंसरी का अपना कोई सुर नहीं होता, बजाने वाला जैसा बजाए वैसा सुर निकालती है। आप तो प.पू. काकाजी की बंसरी बन गए। अब, हम भी अपने मन-बुद्धि के चक्करों में ना फंस कर आपकी बंसरी बन जाएं और जैसे बंसरी अपने अंदर छिद्र करने देती है, वैसे जब आप हमारी घड़ाई करें तब हम भजन का सहारा लेकर चुपचाप हमारा रुपांतर करने दें, ऐसा हमें बल देना !'**

इसके बाद दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से प.भ. अरविंद मेहता सेठ ने और मुंबई मंडल की ओर पू. अश्विनभाई ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। फिर पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. घनश्यामभाई, पू. अश्विनभाई, पू. राजुभाई भट्ट वगैरह ताड़देव के युवकों ने प.पू. गुरुजी को एक प्रशस्ति कार्ड व इन्हें खूब भा जाए ऐसी अनोखी भेंट दी। वह थी– प.पू. स्वामिजी के शब्दों में आत्मीयता की गंगोत्री–'ताड़देव' 6/डी फ्लैट का मॉडल ! **सच में, प.पू. गुरुजी को** प.पू. काकाजी और उनका **'ताड़देव' खूब प्रिय है। तभी तो उन्होंने दिल्ली**

मंदिर के संकुल का नाम भी 'अनिर्देश' से बदल कर 'ताड़देव' ही रख दिया !

हार अर्पण की श्रृंखला में अमदावाद मंडल की ओर से प.भ. शैलेषभाई ने प.पू. गुरुजी को गोल्डन रंग लिया साक्षात्कार स्वर्णजयंती के लोगो का हार अर्पण किया। उसमें प.पू. गुरुजी की 65वीं जयंती निमित्त 65 फूल लगाए थे व सभी स्वरुपों की मूर्तियाँ प.पू. गुरुजी के सर्वदेशीय साधु होने का संकेत दे रही थीं। तत्पश्चात्–

पंजाब मंडल की ओर से प.भ. मुंशीरामजी ने,
सोखड़ा–हरिधाम की ओर से पू. सर्वप्रिय भगत ने,
पेरिस मंडल की ओर से पू. भरतभाई ने,
समढियाळा मंडल की ओर से प.भ. हसमुखभाई व
प.भ. परेश परमार ने,
शिकागो मंडल की ओर से प.भ. दासकाका ने
और
औरंगाबाद के प.भ. जीवनभाई ने प.पू. गुरुजी को हार-भेंट-कलगी अर्पण करी।

प.पू. पप्पाजी की ओर से प.पू. गुरुजी को प.भ. मल्कानी साहेब ने हार पहनाया और पू. विज्ञानस्वामी ने एक भेंट अर्पण करी। । मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के परिवार ने भी प.पू. गुरुजी के लिए खास सूर्यमुखी के आकार का हार बनाया था, जो कि प.पू. गुरुजी ने प.पू. स्वामिजी को अर्पण किया।

संजोगवश **सौ. शीला आंटी** की 60वीं वर्षगांठ 15 मार्च को ही थी। पर, तब वे दिल्ली में मौजूद नहीं थीं। सो आज परियों के रुप में पू. आस्था और पू. श्रेया ने उन्हें हार अर्पण करके सभी की ओर से अभिवादन किया और प.पू. दीदी, पू. योगिनी बहन, सौ. बीना मेहता एवं सभी बहनों-भाभियों की हाज़िरी में सौ. शीला आंटी ने केक कटिंग करी।

तत्पश्चात् प.पू. स्वामिजी ने प.पू. गुरुजी की जयंती की केक काटी। केक का डिज़ाईन भी साक्षात्कार स्वर्णजयंती के लोगो का था।

केक कटिंग के बाद प.भ. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी की जयंती के लिए खास बनाया गया भजन **'मानवरुप में हैं सारथी समर्थ मिले...'** प्रस्तुत किया। भजन के बाद सभा विसर्जित हुई और आतिशबाजी देखने खुले प्रांगण में एकत्रित हुए और फिर प्रसाद लेने गए...

यूं उत्सव में हर एक को आनंद आया ! ब्रह्म का लक्षण है–'आनंदो ब्रह्म'। अर्थात्–'ब्रह्म' की सन्निधि हो या ब्रह्म का अनुसंधान रख कर हम मनन-चिंतन-कथावार्ता-स्मृति करेंगे तो आनंद प्रगट होगा। प.पू. काकाजी ब्रह्मस्वरूप थे और तीन दिन सभी 'काकाजी कान्शियसनेस' में डूबे रहे; इसीलिए यह आनंद प्रगट हुआ। दूसरी ओर मुंबई मंडल भी धून करता-करता आया था कि शिविर में आए सभी खुश होकर– राजी-राजी होकर जाएं। उनकी इस भावना-प्रार्थना को मानो हाथ-पैर आए हों ऐसे सभी खुश हो गए–राजी-राजी होकर गए !

आश्चर्य की एक और बात यह भी थी कि तीनों दिन गुजराती, पंजाबी किसी मेहमान ने भी परहेज का खाना नहीं खाया, बल्कि जो खाना बना था वही सभी को खूब भाया... मुंबई से आए **पू. सीमा बहन** को किसी ने पूछा कि– आपको खाना पसंद आया ? तो उनके मुँह से सहज ही निकला कि– **'किस-किस चीज़ की तारीफ करें ? खाना लाजवाब, कथावार्ता लाजवाब, डेकोरेशन लाजवाब, ठहरने की व्यवस्था लाजवाब, प्रदर्शनी भी लाजवाब !!'**

सच ! इस उत्सव के सारे आयोजन को देख कर सेवकों को स्पष्ट लगता था कि स्वयं प.पू. काकाजी ने ही कण-कण में प्रवेश करके सारा कन्ट्रोल ले लिया हो। तभी तो छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक को यह 'उत्सव' स्पर्श कर गया होगा ना ? और... **सेवकों की डेढ़ महीने की अथक् परिश्रम भरी थकान तो प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी के मुख पर झलक रही प्रसन्नता से ही जैसे उतर गई...**

यूं देखते ही देखते शिविर के तीन दिन मानो पंख लगा कर उड़ तो गए, लेकिन हमेशा के लिए हर एक के दिलो-दिमाग पर एक अनोखी, अद्वितीय, अमिट छाप छोड़ गए कि–

'यह मनाई थी, प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती !!'

(भगवत् कृपा के अगले अंक में हम सभी गुणातीत स्वरुपों, संतों व मुक्तों के प्रवचनों के सारांश का लाभ ले सकेंगे।)

*[प.पू. काकाजी की साक्षात्कार स्वर्णजयंती निमित्त ढाई दिन चली **'ज्ञानशिविर'** के पश्चात् **31 मार्च की शाम** को **प.पू. गुरुजी की 65वीं जयंती** मनाने का आयोजन था। उसमें प.पू. गुरुजी के प्रति श्रद्धा व एक अपनेपन से **श्री महेन्द्र कपूरजी** व उनके सुपुत्र **श्री रोहन** कपूर जो पधारे थे, उन्होंने माहौल को इतना अधिक जोश, उमंग-उल्लास से भर दिया कि समय की मर्यादा व अपनी सुध-बुध को सभी भूल बैठे थे। उत्सव पूरा हो जाने के बाद कई मुक्तों के मुँह से सहज निकल पड़ा कि जिनकी जयंती निमित्त यह सभा थी, उनका यानि– प.पू. गुरुजी का आशीर्वचन सुनने तो मिला ही नहीं ! इस बात को कई मुक्तों ने खूब फील किया, सो आखिरकार पत्रिका में स्वर्णजयंती निमित्त कुछ संदेश लिख कर देने की प.पू. गुरुजी को प्रार्थना करी... और भगवत्स्वरुप संत तो भक्तों के वश... सो, **प.पू. गुरुजी** ने **साक्षात्कार स्वर्णजयंती** एवं **12 जून को आ रहे प.पू. काकाजी के प्रागट्य दिन** निमित्त जो लिख कर दिया, उन भावनाओं-रहस्यों से सभी मुक्त लाभान्वित हो, हमें हमारे निशान का ख्याल आए... उनकी इन बातों को लेकर अब हम जीने ही लग पड़ें–इस भावना से आपके समक्ष रख रहे हैं !]*

''प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती जो मनाई गई, तब से एक ही विचार मन में आता है कि–
उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या और कितना-कितना किया ?
कैसी और कितनी कसनी सहन करी ? हमारे लिए - हमारे कारण कितने बुरे भी दिखाई पड़े ?
परन्तु, हमने प.पू. काकाजी के लिए क्या किया ? हमने उन्हें क्या दिया ?
यह तो उनके द्वारा समय-समय पर भेजे संदेश पढ़ने पर ख्याल पड़ता है।
और तब, श्री हरिन्द्र दवे द्वारा लिखी **'माधव क्यांय नथी'** में श्री मनुभाई पँचोली का एक मार्मिक वाक्य–
'व्यथा महापुरुषों को मिला एक वरदान है' वह बुद्धि के पट पर उभर आता है।

1975 में तो लिखा था–

'एक दिव्य योजना–
...उसका माहौल (बापा) स्वयं मिट कर खड़े कर गए।
लेकिन, कोई प्लेटफॉर्म अब तक तैयार हुआ नहीं। सो **अंतर में दर्द होता है** कि–
हमने प.पू. बापा की जैसी चाहिए, वैसी शोभा बढ़ाई नहीं...
...सच्चे बड़े पुरुष कभी भी उदास तो होते नहीं... लेकिन अंतर से हमारी ओर से प्रसन्न नहीं हों,
इससे अधिक मुक्तों के लिए कोई बड़ा महापाप नहीं है।'

पर, इनकी बात पर हमने गौर नहीं किया।

सो,**1977** में यूरोप से पत्र में लिखा था–
'हम एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते हैं–
...जहां भेदभाव नहीं,
आंतरिक एकता व दिव्य एकता से जीवन जीने वाला समुदाय !
पू. बापा की वह योजना उनके संकल्प से पूर्ण करनी बाकी रही !'

और
फिर भी हम नहीं समझे,
सो–**1984** में यानि (स्वधाम जाने से सिर्फ दो साल पहले) इन्होंने अपनी बात करके हम से जो चाहते थे,
वह निम्न रुप में स्पष्ट लिख दिया–
'मैंने तो (हमारा सब कुछ) साझा ही गिना है।
जहां जैसी जिस वक्त जरुरत वैसे वहां वर्त लेना। मेरा-तेरा, निजी-अलग नहीं रखना।
सब कुछ-सर्वस्व प.पू. बापा का ही है... हमें इतना ही सिखाना है।
बाकी तो सभी मुक्त करते ही हैं... शायद हीरों से तोले जाएं तो भी क्या ? लेकिन रहस्य पकड़ा नहीं कहा जाए...'

1985 में नए वर्ष के लिए भेजे शुभाशीष के ड्राफ्ट में भी उन्होंने अंतिम चेतावनी के रुप में लिखा कि–

'विशिष्ट प्रकार का अनुग्रह...
अक्षरब्रह्म ने घनश्यामानंदस्वामी के लिए प्रायश्चित भी खुद ही करके किया...
प.पू. बापा ने ऐसा जोग तो दे दिया है।
लेकिन लाभ लेना आता नहीं है !'

विचार को पाएं कि यह संदेशा कब का ? 1986 के मार्च में तो उन्होंने देह त्याग किया !
यानि कि मात्र 6 महिना पहले का ही !
ऐसे तो कई कितने सूचन हमें अकेले में, सभाओं में, शिविरों में, पत्रों द्वारा वे करते ही रहे थे-प्रकाश फेंकते ही रहे थे।
परंतु,
हमारे पंचविषय के रमणीय राग कहो,
हमारी जड़ता कहो,
हमारा पागलपन कहो,
हमारी छुपी महत्वाकांक्षाओं की–आदर्शों की पूर्ति का जनून कहो,
हमारा अव्यक्त 'सद्‌गुरुपन' कहो,
हम उनके सूचनों की उपेक्षा ही करते रहे।
बेशक, सबको स्वरुप-प्राधान्य की कथा हम करते ही रहे-समझाते रहे।
स्वामी की बात भी पढ़ाते कि– भगवान के बिना तो आत्मज्ञान, वैराग्य, धर्म भी अभद्र है।
तो फिर, हमारे सत्यों-आदर्शों, महत्त्वकांक्षाओं की तो क्या बिसात रही थी ?
सोचें कि–

इनके पास हमें उन चीजों की ही अधिक विशेषता रही ना ?
तभी तो एक बार जिन्हें स्वरुप कह कर विरदाए, उनके ही मूल्यांकन हमारे ज्ञान के स्केल से किया ना ?
प.पू. काकाजी कहते ज्ञान का अंत स्वरुप !
वेद में ज्ञान का भंडार है, लेकिन मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने कहा– 'ब्रह्मज्ञ-पांचवां वेद' ! यह भूल गए ना ?
पर, मैं क्या समझता हूँ कि हमें प.पू. काकाजी में मनुष्यभाव तो नहीं, परंतु थोड़ा-थोड़ा मायिकभाव रह गया।
सो, इनकी बात को अब भी हम पकड़ नहीं पाए हैं, इनकी बातों का तोल नहीं किया !
बल्कि, कितने सच्चे थे वे ? पर, कैसा-कैसा हम उनके बारे सोचते रहते थे ?
जैसे कि, जब भी वे बोलते कि– **'दिल्ली मेरी और मैं दिल्ली का'**–तब अक्सर मुझे ही होता था कि
यह कह कर वे मुझे और दिल्ली के मुक्तों को बहला देते हैं।
पर, आज प्रतीत होता है कि वाकई– ही मेन्ट इट !
और
तब ही तो यूं ढाई दिन की ज्ञानशिविर के रूप में उनके साक्षात्कार की स्वर्णजयंती मनाने का कलश
उन्होंने सारे गुणातीत समाज में से दिल्ली पर ढोला !
और
धन्यवाद हो–उत्तर भारत के ये मुक्तों को कि वे प.पू. काकाजी का ऋण भूले नहीं
और
एक उमंग से स्वर्णजयंती के आयोजन में तन, मन व धन से जुट गए।
मुझे बराबर याद है;
इस मंदिर के लिए हमें जब पहले 500 गज जमीन मिली थी, तब प.पू. काकाजी ने बीमारी ग्रहण करी थी।
सो, दिल्ली के मुक्तों ने प.पू. काकाजी को इस बारे का कोई टेन्शन नहीं देना करके
जो पैसे भरने थे वे सब ने कन्ट्रीब्यूट करके भरवा दिए थे।
यह खबर जब प.पू. काकाजी को मैंने दी थी, तब उनकी आँखें गीली हो गई थीं !
तो, आज ये सब देख कर तो कितने राजी हुए होंगे ?
और...
मुझे तो सबसे अधिक आनंद प.पू. स्वामिजी आए, ताड़देव से सभी भाई पूरा मंडल लेकर आए वह देख कर हुआ...
मानो हमारा एक पूरा कुनबा इकट्ठा हो गया, जिसे प.पू. काकाजी कहा करते 'योगी परिवार-योगी परिवार'...
आज के दिन मेरी यही प्रार्थना है कि बस **ऐसे ही दिन बने रहें–ऐसी ही भावना बनी रहे**
और
यही उनकी–प.पू. काकाजी की ख़्वाईश थी।
सो, उस रास्ते पर अग्रसर होने हम अब तो कृतनिश्चयी बन कर
साक्षात्कार स्वर्णजयंती और आ रही उनकी **जन्मजयंती** मनाई सार्थक करें !''

✡✡✡✡✡

प्रशस्ति...

।। स्वामिश्रीजी ।।

दि. 13.03.02

सदा दिव्य साकार स्वरुप प.पू. काकाजी के
दिव्य मानसपुत्र प.पू. गुरुजी...
आपके मंगलकारी प्रागट्य पर्व पर
ताड़देव मुक्त मंडल की ओर से आपके स्वजन सरीखे...
सभी साधक भाईयों के खूब ही हेतपूर्वक
शुभकामना सह जय स्वामिनारायण !
आज के इस दिव्य अवसर पर
आपके संग हमने बिताए
उस दिव्य समय की अनंत स्मृतियाँ...
मानसपट पर उभर आती है।
दिल आनंदसभर और भावविभोर हो जाता है।
आपका प.पू. योगीबापा और प.पू. काकाजी के
साथ का–
दिव्य संबंध...
उनके प्रति की अनन्यभक्ति...
हम सभी साधक भाईयों के साथ का–
आपका खुल्ले दिल का संबंध...
संबंध वाले भक्तों के प्रति आपका माहात्म्य...
और
गुणातीत स्वरुपों को निहारने की आपकी गहरी सूझ...
सहज ही याद आ जाती है।
पूर्वाश्रम में प.पू. बा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी,
पू. कांतिकाका तथा अन्य वडीलों की सेरेछाया में...
ताड़देव से आपने आध्यात्मिक मार्ग पर
पदार्पण किया।
प.पू. योगी बापा ने श्रीजी महाराज के साथ के
आपके पूर्व के संबंध को पहचान कर
आपको भागवती दीक्षा दी
और
उनकी दिव्य योजना में शामिल किया...

आप विकसित हुए... विस्तृत हुए
और
आपके साथ रह कर—दूर रह कर हमें भी...
आपके...
स्नेह की, भक्ति की, सेवा की, हास्य की, रोष की,
रुदन की, हँसी-विनोद की, गहरी परख की, हर्ष की,
लगाव से भीगी ऋजुता की, सिद्धांतिक अडिगता की,
खेलदिली की, जिंदादिली की...
ऐसी तो कई कितनी अविस्मरणीय स्मृतियों का
अद्भुत लाभ मिला है।
मानो कि, जैसे कोई अनमोल खज़ाना मिला है।
इन सभी में ताड़देव के प्रति का आपका खुल्ला पक्षपात
हमेशा सहज ही उभर आया है।
आपके समग्र अस्तित्व और व्यक्तित्व में
यह स्थान तो ऐसा अविभाज्यरुप से बुना हुआ है कि—
दिल्ली में भी मंदिर के समग्र संकुल का
नाम आपने 'ताड़देव' देकर
उसकी दिव्य स्मृति और माहात्मय को
अनेक गुणा विस्तृत और चिंरजीव किया है।
'स्वामिनारायण मार्ग', 'काकाजी लेन' और 'ताड़देव'
उसे ही आपका पता बनाया।
आपके विशिष्ट व्यक्तित्व को मिटा कर
'ताड़देव' को ही आपका सर्वनाम बनाया...
सच में ! आपकी इस अद्भुत भक्ति के सम्मुख
हम नतमस्तक हो जाते हैं।
हे ! गुरुजी,
केवल गुणातीत समाज में ही नहीं...
परंतु, समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय में...
अजोड़ ऐसे इस 'ताड़देव' तीर्थस्थान के,
आधी सदी से भी ज्यादा समय के
क्रांतिकारी इतिहास को
आपने अपनी आँखों से निहारा है...
आप उसके केवल साक्षी ही नहीं,
बल्कि उसके एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंगभूत-भागरुप हो...
कई कितने मुक्त यहां आए...रहे...
और यहां से अन्य जगह सिधारे...
ताड़देव की इन दीवारों में प.पू. काकाजी की धून्य की भांति
उनकी भी अनेक स्मृतियाँ और स्पंदन गूंजते रहते हैं।
उनके जीवन की कई कितनी धन्य और नाजुक पलों में
उन्हें ताड़देव अनिवार्य रूप से याद आता होगा ही...
परंतु... आपके लिए तो ताड़देव... मानो सर्वस्व है...
क्योंकि आपने उसे आपकी अभिप्सा और भक्ति से...
आपके जीवन में सदैव जीवंत रखा है।
हे ! गुरुजी...
गुरुहरि प.पू. काकाजी के
साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती के
और
आपके प्रागट्यदिन के मंगल अवसर पर
आपके चरणों में हम और तो क्या रखें...??
जिस सर्वोच्च तीर्थस्थान की
प.पू. काकाजी ने हमें भेंट दी...
जिस स्थान के साथ जुड़ी आपकी
कई कितनी अमिट स्मृतियों के हम आसक्त हैं
और दूसरी कितनी ही
चिरस्मरणीय क्षणों और स्मृतियों के लिए उत्सुक हैं,
ऐसे इस परम पवित्र तीर्थस्थान की
एक छोटी-सी प्रतिकृति को...
हमारे अस्तित्व और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रुप में
आपके चरणों में अर्पण कर रहे हैं...
कई मीठी और मधुर क्षणों का दर्पण अर्पण कर रहे हैं।
कभी कभार की बेस्वाद क्षणों का समर्पण कर रहे हैं...
वह स्वीकार कर, आप हमें धन्य करो... कृतार्थ करो...
प.पू. काकाजी जैसे 'मावतर' के संबंध को
और
ताड़देव जैसे सेतु को सुदृढ़ करने हम सभी कृतनिश्चयी बनें...
इस हेतु आप मंगल आशिष दीजिए...सूझ दीजिए।
हे गुरुजी...
शतं जीव शरदः। शतं जीव शरदः।। शतं जीव शरदः।।

लि. **ताड़देव मुक्त समाज की ओर से...**
आपके अनुज समान...
बापु, राजु भट्ट, राजु ठक्कर, भरत, वशी, अश्विन, अरुण,
हरख, घनश्याम, गिरीश, हेमंत, महेन्द्र, किशोर के
खूब ही हेतपूर्वक प्रणाम सह जय स्वामिनारायण !

Statement about Ownership and other particulars about newspaper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 15 May, 2002

विज्ञप्ति...

खूब हर्ष की बात है कि– 'आस्था' चैनल पर
12 जून '02, बुधवार (प.पू. काकाजी महाराज की जयंती के ही दिन) की सायं 4:30 बजे
साक्षात्कार स्वर्णजयंती उत्सव को हम दोबारा अपने टी.वी. पर देख पाएंगे।
आपके सम्पर्क में रहते गुणातीत समाज के सभी मुक्तों को भी आप यह जानकारी दे दीजिएगा
ताकि वे भी टी.वी. द्वारा इन स्मृतियों का लाभ ले पाएं।

आओ, जपयज्ञ करें...

हर वर्ष की तरह इस बार भी 11 मई '02, शनिवार से–12 जून '02, बुधवार तक
रोज सुबह 6:30 से 8:15
प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में 'ताड़देव' में जपयज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है।
तो,
मुंबई - गुजरात - पंजाब - हरियाणा - यू.पी. - राजस्थान वगैरह से
जो भी इस जपयज्ञ में भले थोड़े दिनों के लिए आने की इच्छा रखते हों;
वे यदि हमें पहले से सूचित कर पाएं,
तो उनके ठहरने - करने की व्यवस्था कर रखने में हमें सुविधा होगी।

– योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 23.5.2002, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 25.5.2002, शनिवार – नृसिंह जयंती
(3) दि. 1.6.2002, शनिवार – **प.पू. पप्पाजी के दृष्टा दिन की स्वर्णजयंती**, गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(4) दि. 6.6.2002, गुरुवार – एकादशी, व्रत
(5) दि. 7.6.2002, शुक्रवार – **गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का प्रागट्य दिन**
(6) दि. 12.6.2002, बुधवार – **ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन**
(सुबह 6:30 से 8:15 मनाएंगे और जपयज्ञ की पूर्णाहुति करेंगे।)
(7) दि. 21.6.2002, शुक्रवार – भीम एकादशी, व्रत
(8) दि. 6.7.2002, शनिवार – एकादशी, व्रत
(9) दि. 12.7.2002, शुक्रवार – रथयात्रा

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi